गोदनामा

जैसा इतने दिनों हवा उड़ रही थी, वैसा ही हुआ। फिरतूराम ने ये खबर सुनी, उस दिन फिर दारू पी ली। जैसे पी लेना सब संकटों का निदान हो । बड़ा लड़का ओसारे में खड़े होकर बड़बड़ाया, ''मरने बैठे हैं, रात भर खांसते हैं, मगर पिऐंगे अलबत्ता ! कौन समझाऐ इनको।'' अब फिरतूराम नासमझ होता, तो कोई बात नहीं थी। आदमी समझदार हो, और बेबस, लाचार हो, तो क्या करे ? मोरडोंगरी गाँव,उससे लगे खेत खलिहान,सबको खाली कराने की खबर थी। पिछले कई महीनों से जो नाप जोख हो रही थी बड़े - बड़े नक्शे बन रहे थे, अजीब-अजीब से औजार लेके नये चेहरे इधर-उधर घूम रहे थे, सबका नतीजा सामने आ गया था। मोरडोंगरी को इस जमीन से बेदखल किया जाऐगा, यहाँ एक बहुत बड़ा कागज कारखाना बनेगा, नई बस्ती बनेगी, हजारों-हजार लोग बसेंगे। और गाँव ? सिर पर आकाश है, तो नीचे धरती की क्या कमी ? पूरा मोरडोंगरी उठाकर नदी पार रख देंगे।

गाँव के छोर पर ही नदी थी। परली तरफ की कगार ऊँचाई पर थी। खूब लंबा-चौड़ा, ऊबड़-खाबड़ मैदान, नदी की लंबाई के साथ साथ दूर तक फैला था। मैदान के उस पार जंगल शुरू हो गये थे। मोरडोंगरी गाँव को इधर से उठाकर,उस पार रख देना था। नये बने नक्शों में तो ऐसा हो ही गया था। जमीन को कागज पर उतारकर,अब कागज को जमीन पर उतारना था।

गाँव के लोग चौपाल पर, चबूतरों,खलिहानों पर बतियाते रहे। सिर जोड़कर खुसफुसाते रहे। सरकारी नोटिस मिल गये। पटवारी और मास्टर से,राजस्व-संहिता के अनुसार भू-अर्जन हेतु" का मतलब समझते रहे। कारखाने के सिलसिले में घूमते लोगोंसे सुनते रहे- जमीन, मकान, खेत-खलिहान के मालिको को मुआवजा दिया जाऐगा, खूब पैसा बटेगा, नदी पार, नया गाँव बसाया जाऐगा। लोगों को समझाया गया, कि उनके लड़कों को कारखाने में नौकरी मिलेगी, धंधा-रोजगार के लिये कर्जा मिलेगा, पढ़ाई-लिखाई का इंतिजाम होगा, हुनर सिखाया जाऐगा। गाँव वालों ने सपने में नहीं सोचा होगा, इतनी खुशहाली मिलेगी। हाड़-तोड़ मेहनत के बाद बिना सपने के सोने वालो ने सपने देखना शुरू कर दिया, बरसात आ गई। खूब घनघोर बारिश। इस बरस धान की बुआई नहीं हुई। खेत की मेढ़ें तोड़कर पानी नदी में बहा दिया गया। किसानों के पांव कीचड़ में नहीं सने, मेंढ़क टर्राते रहे। दूर शहर से कुछ नेता आऐ। भाषण हुए। नेता लोग गरजे, मर जाऐंगे,गाँव खाली नहीं करेंगे। धरने, जुलुस, झण्डे, नारे, सब हुए। तीसरे दिन नेतागण, कारखाने वालों की नई चमचमाती गाड़ी में बैठकर चले गये। एक ट्रेक्टर-ट्राली में भरकर झण्डे, बाँस, शामियाना, दरियाँ, और माइक को नजरों से ओझल कर दिया गया।

गाँव वाले सिर खुजाते रहे - खाऐंगे क्या ? पहरेंगे-ओढ़ेंगे क्या ? रहेंगे कहाँ ? लोगों के बीच पैसा बढ़ा समझाया गया, कि अभी यह रखो, फिर और मिलेगा, मिलता जाऐगा - ढेर सारा। एक-एक करके गाँव खाली होता गया। लोगों ने नदी पार कगार के किनारे-किनारे झोंपड़ियाँ तान दीं। बाँस, बल्ली, मोम-कप्पड़,सबकी मदद दी गई - पहले गाँव तो खाली करो, उधर पहुंचो,फिर सब कुछ मिलेगा। खेती, जमीन,झोंपड़े,सब इसी पार छूट गये। फिरतूराम रात के अंधेरे में मरघट पहुंचा। जहाँ उसके बाप की क्रिया हुई थी, वहाँ की मिट्टी उठाकर बटुऐ में डाली,और अपने लड़कों को लेकर नाव में चढ़ गया।

गाँव खाली कराने के बाद पूरे इलाके में ट्रेक्टर, डोज़र चलने लगे। सारी जमीन सपाट कर दी गई। तम्बू, कनातों की लाइन लग गई। नये-नये चेहरे आते गये। गाड़ियों, मोटरों, डोजरों और

Scanned by CamScanner

नई-नई मशीनों का कानफाड़ू शोर बढ़ता गया। बड़े-बड़े गड्ढे खुदे, उसमें से सीमेंट-कान्क्रीट की फसलें ऊगे लगी। कारखाने के साथ-साथ रिहाइशी बस्ती भी बन रही थी। पूरे इलाके में साथ-साथ रिहाइशी बस्ती भी बन रही थी। पूरे इलाके को खूब ऊँची चारदीवारी से घेरकर उसके ऊपर ऊंचे ऊंचे ऐंगिलों में तार की फैंसिंग कर दी गई। चार बड़े-बड़े गेट बनाकर वहाँ गुमटियाँ बनाई गईं जिनमें वर्दीधारी गार्ड खड़े कर दिये। ये लोग गाँव वालों की आमद रफ्त देखकर,नाक-भौं सिकोड़ते, मगर कुछ कहते नहीं।

एक साल बीत गया। कारखाना खड़ा हो रहा था। रिहायशी बस्ती भी काफी कुछ बन चुकी थी। जहाँ मोरडोंगरी का सोया हुआ सा गाँव था, वहाँ चमन हो गया था। रात-दिन शोर मचा रहता। मशीनें घरघराती रहतीं। सैकड़ों नये-नये लोग आ गये थे। फिरतूराम एक दिन इस नई बस्ती में घूमने गया। क्वार्टरों की कतारें,और नई चमचमाती सड़कों के बीच, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। फिरतूराम उस जगह पहुंचा जहाँ कभी उसका पुराना खपरैल घर था। वहाँ गोल-फैंसिंग से घेरकर चौराहा बना दिया गया था। फैंसिंग के किनारे लाल-नीले फूलों से पौधे अटे थे, और चारों तरफ फव्वारे लगे थे। ऐन बीचों-बीच उसके बाप का लगाया हुआ आम का झाड़ ठूंठ बनकर खड़ा था। कभी फलते-फूलते आम को, काटकर उसके ठूंठ पर पेन्ट कर दिया था। पानी की फुहार ठूंठ को भिगो रही थी,और नीचे से रंगी बिरंगी रौशनी उसे जगमगा रही थी। वह आगे बढ़ा। गाँव का पोखर मिट्टी डालकर पाट दिया था। अमराई साफ करके दुकानें बना दी थीं। सारे झाड़-पेड़ काटकर जगह साफ कर दी थी। उसे लगा कि वह, उसका गाँव, खेत, मकान के साथ-साथ, झाड़-पेड़ भी गाँव से बेदखल कर दिये गये हैं। सड़कों के किनारे और बीच-बीच में चौकोर से आहते घेरकर, सैकड़ों की तादाद में वृक्षों के पौधे लगाऐ गये हैं, जो तारों और लोहे की जालियों से घिरे हैं। कुछ लोग एक ज़गह खड़े बातें कर रहे थे, ''फलते-फूलते पेड़ काट के पौधे उगा रहे हैं, है ना अजीब बात ?'' दूसरा बोला - ''कोई नियम-कायदा होना चाहिए, झाड़ है तो क्या ? अपनी मर्जी से कहीं भी ऊग जाऐं?'' और वह जोर से हंस पड़ा।

कुछ रूककर वह बोला ''अब गंवारों के ऊबड़-खाबड़ जंगल नहीं चलेंगे। ये प्लान्टेशन है समझे ? पूरे ऐरिया में बीस हजार पेड़ लगेंगे। बस्ती और कारखाना हरियाली से ढंक जाऐगा।''दूसरे ने कहा - ''आम, जामुन, बरगद, पीपल काट के महुआ-बबूल उगा रहे हैं,ये कैसी हरियाली?''

पहला फिर मुंह बिचकाकर बोला ''हरियाली याने हरा-भरा, ग्रीनरी। जब सावन के अंधे हवाई-जहाज में बैठ के नीचे झांके,तो उनको हरा-हरा सूझना चाहिये। दैट इज प्लान्टेशन।'' फिरतूराम आगे बढ़ गया। बस्ती के छोर पर एक बहुत बड़ा मंदिर बन रहा था। उससे सटा हुआ विशाल पार्क था। पार्क में भी काम चल रहा था। खूब रौशनी थी। एक कोने में लोहे की जालियों से घिरा अहाता था, जिसमें खरगोश, बंदर, हिरन कूद-फाँद रहे थे। वहीं एक कोने में विराजमान थे - मोरडोंगरी के पुराने ग्राम-देवता। सुन्दर सजावटी स्टैन्ड पर, पेन्ट किये हुए, और बगल में एक बोर्ड पर सुनहरे अक्षरों में खुदा, उनका परिचय। फिरतूराम लौट आया। नदी पार करके अपनी झोंपड़ी के पास कगार पर बैठ गया। रात काफी हो चली थी। वह सामने जगमगाते रौशनी के समंदर को देखता रहा, जिसकी परछाई नदी में उतर आई थी। रौशनी की लकीरें पानी में गड़मड़ होतीं, फिर सीधी खिंच जातीं। उसे लगा, वह अपने खेत मे खड़ा है। तेज हवा चल रही है। खेत में भरे पानी में, धान की फसल की परछाई लहलहा रही है।

एक दिन कारखाने की तरफ से बूंदी के लड्डुओं की टोकरी मोरडोंगरी में आई। पहला बायलर शुरु किया गया था। गाँव का जगनाथ उसको दोनों हाथों में लड्डू देता बोला, '' खाले फिरतूराम। मोरडोंगरी की बरसी की मिठाई है।'' मोरडोंगरी के आदमी रोज आस लगाऐ कारखाने के गेट पर

Scanned by CamScanner

खड़े होते। वे याचना भरी नजरों से ताकते,मुआवजा, रोजगार, नौकरी, मजूरी। इतनी भीड़ में किसी किसी का नंबर लगता। उसे भीतर बुलाते। उसका स्वागत सत्कार होगा, फोटुऐं खिंचती, सब आस भरी नजरों से उसे देखने लगते। एक दिन फैक्टरी के बड़े-बड़े लोग मोरडोंगरी गाँव में आऐ। भीड़ लग गई - जरूर मुआवजा बंटेगा खूब समारोह हुआ। कारखाने वाले, पुलिस, कचहरी वाले, शहर के नेता लोग, फोटो खींचने वाले सब थे। घोषणा हुई,कि मोरडोंगरी गाँव को कारखाने ने गोद ले लिया है। गाँव की तरक्की की जाऐगी। पक्की सड़कें, स्कूल, अस्पताल, बिजली, पक्के मकान सबका इंतिजाम किया जाऐगा। मोरडोंगरी चमन हो जाऐगा। स्वर्ग हो जाऐगा।

रतिराम खुसफुसाया ''और हम क्या हो जाऐंगे ? हमारी खेती-बाड़ी ?' वक्ता कह रहे थे, ''अब आप लोग गाँव के गंवार नहीं रहे। आपके बच्चे पढ़-लिखकर ऊँची-ऊँची नौकरी करेंगे,तरक्की करेंगे। मोरडोंगरी इज नो मोर,- डोंगरी।''

फाइलें दौड़ रही थीं। योजनाएं बनती जा रही थीं। कागज सरक रहे थे। अंगूठों की स्यायी सूख भी न पाती, कि वे फिर बैंगनी हो जाते। कारखाने गेट पर नया दफ्तर बन गया। तहसीलों मे भी एक बाबू, एक कुर्सी,एक मेज लगा दिये गये। कभी कभी लंबा चक्कर काट के कोई ट्रक आता। गिट्टी, बोल्डर, मुरम,या बिजली के खम्भे पटक जाता।

जगन्नाथ का लड़का अपने बाप से पूछा ''बापू जे का बनै है ?'' उत्तर मिला ''सरग जाबै की नसैनी।'' जगह-जगह नये चमचमाते बोर्ड लग गये। एक खूब बड़े बोर्ड पर ''राष्ट्रीय मलेरिया'' लिखकर बड़ा सा मच्छर बनाया गया। फिर पेमेन्ट नहीं मिलने से पेन्टर भाग गया। समय बीतने के साथ-साथ सारा जोशो खरोश ठंडा पड़ गया। कुछ लोग दूसरे गाँव को चले गये। नदी की रेत में, बाड़ घेरकर कुछ लोग खरबूज-तरबूज उगाने लगे।कुछ नहीं हो तो भी, भूख, रास्ता सुझा देती है। कुछ लड़के दूर शहर में रोजी तलाशने लगे। पचीसों नये चेहरे नदी की कगार पर आ बसे।

ये लोग कबाड़ी, उचक्के, चोर- बदमाश थे, जो सुदूर शहर से आ बसे थे। गाँव के लड़के भी इनकी सोहबत में चन्ट हो गये। गाँव से इनका झगड़ा-फसाद हुआ, मारपीट हुई, फिर सब शाँत हो गया। फिरतू राम का बड़ा लड़का चार किलास पढ़ा था। वह फैक्ट्री-ऐरिया में सट्टा-पट्टी लिखने लगा। मंझला, सबकी नजरें बचाकर हाथ भट्टी की शराब, नदी की रेत में गड़ा आता, फिर अंधेरे में उन्हें निकालकर आगे पहुंचा देता। छोटा, रात के अंधेरे में दीवारे फांदकर कारखाने से लोहा लंगड़, भरी एक बोरी पार करते पकड़ा गया, और जेल चला गया। फिरतूराम पत्थर की तरह जड़ बना रहा-कारखाने में तीनों के पेट पालने की जुगत कर दी थी।

एक दिन नदी पार करके उस पार पहुंचे लोगों ने देखा,कि कारखाने का नदी वाला गेट बंद कर दिया है। वहाँ पक्की दीवार उठा दी गई। पता चला,कारखाने और कालोनी मे आम शिकायत थी, कि नदी पार के लोग चोर हैं, उजड्ड, जाहिल, गंवार, वाहियात हैं , जो माहौल खराब करते हैं। आखिर यहाँ का स्टैण्डर्ड, यहां का एक डैकोरम है या नहीं ? क्यों फालतू लोग यहाँ आऐं ? किसी महानगर से काटकर लाऐ गये जमीन के इस टुकड़े पर कोई बदशक्ल धब्बा क्यों पड़े ? रहें ये गाँव वाले अपनी चोस-बस्ती में, यहाँ उनका क्या काम ? अब नदी पार वालों को पड़ोस के गाँवों में या शहर जाना होता,तो पांच किलोमीटर का चक्कर काटकर जाते।

फिरतूराम रात को लौटकर, नदी की कगार पर बैठा था। निपट अंधेरे में वह उसपार के रौशनी के समंदर को देखता रहा - उसे लगा,उस पार एक मेला लगा है - खूब भीड़-भाड़, चहल-पहल, शोर - शराबा..... हजार-हजार आदमी जुड़ा है ..... सब कुछ नदी की सतह पर उतरा रहा है .....कारखाना बस्ती,दीवार,सब बहता जा रहा है..... अकेला वही एक ठूंठ जैसा, अपनी जगह गड़ा है।

Scanned by CamScanner

समय गुजरता जा रहा था। एक दिन, रात होते – होते मुर्दा बस्ती,मोरडोंगरी में अचानक चहल–पहल बढ़ गई। कारखाने की लंबी परिक्रमा करके दूर पर बने पुल से होकर कुछ जीपें इस पार बस्ती में आईं। चमचमाती गाड़ियाँ;लोग इकट्ठा होने लगे। एक ऊंचे टीले के पास गाँववालों को इकट्ठा किया गया। गाड़ी से आये लोगों से घिरा हुआ एक ऊँचा पूरा आदमी था, जिसने चकदक सूट पहन रखा था। सब चुपचाप उसकी तरफ देख रहे थे। सब लोगों को वहीं बैठाया गया। फिर उस आदमी ने कहना शुरू किया ''भाइयों, आज हम एक खुशखबरी लेकर आपके पास आये हैं।'' आपको जानकर खुशी होगी,कि अपने इस कागज-कारखाने का विस्तार किया जा रहा है। अभी हम जितना कागज बना रहे हैं, उससे दुगना बनाया जाऐगा। आप जानते हैं,आज देश की सबसे बड़ी जरूरत क्या है? बताइये ?''

सब सिर खुजाते बैठे रहे। सबसे आगे नशे में झूमता फिरतूराम बैठा था। वक्ता ने सबके ऊपर, नजर फिराई फिर बोला, ''कागज,सबसे जरूरी चीज है कागज। कागज पर आज सारा मुल्क दौड़ रहा है। विकास के लिये, तरक्की के लिये, खुशहाली के लिये चाहिए कागज। हम इतना कागज बनाऐंगे, कि यहाँ से चाँद तक बिछा दें।''

वह रूका। उसके साथ आऐ चार–पाँच लोगों ने तालियाँ बजाईं। गाँव वाले मुंह बाऐं देख रहे थे। फिरतूराम उसे गौर से देखता कुछ बरस पहले जो आऐ थे, वो भी हू–बहू ऐसे ही थे। ये लोग कैसे चिकने, सपाट, सफेद, कड़क, चौकोर और एक से होते हैं? कारखाने मे बनने वालो कागज की तरह कारखाना आदमी भी बनाता है क्या, छाप–ठप्पा लगाकर ? वह बोलता जा रहा था, '' तो हमें कारखाने को बढ़ाना है। हमें जगह चाहिए। बैम्बू–स्टोरेज के लिये, नये बायलरों के लिये, पल्प–प्लान्ट, सोडा–रिकवरी यूनिट के लिये, सबके लिये। हमें जमीन चाहिए। खुशी की बात है, हमने आपका गाँव चुना है। हमें आपका – आप सबका सहयोग चाहिए। आप खुशी–खुशी हमारे साथ आइये। हमने जहाँ – जहाँ उद्योग डालें हैं, उस पूरी धरती को चमन बना दिया है। हम आपको नई बस्ती बनाकर देंगे। पक्के मकान, चमकती हुई सड़कें, बिजली, पानी, स्कूल, अस्पताल, बाजार, पार्क, आपके बच्चोंको नौकरी, धन्धे–व्यापार में मदद,और भरपूर नगर मुआवजा। वैसे तहसीली से आपको नोटिस मिलेगी, जल्दी ही, मगर वो खानापूरी भर है। आपके गाँव को यह कारखाना गोद ले लेगा।''

सन्नाटा खिंच गया। सुई गिरे,तो आवाज हो जाऐ। गाड़ी में उसके साथ आऐ एक व्यक्ति ने उसके कान में खुसफुसाकर कुछ कहा।

वह मुस्कुराया और बोला, ''हाँ,तो पता चला है,कि गाँव को पहले ही गोद लिया जा चुका है। अच्छा है। मगर अब पक्का गोदनामा होगा। कोई कमी रह गई होगी, तो इस बार भरपूर मदद दी जायेगी। यह गाँव हमारे लिये बच्चे जैसा होगा। इसका लालन–पालन हम करेंगे। इसकी तरक्की की पूरी जवाबदारी हम लेते हैं।''

वह अचानक झुका। पांव के पास बैठे फिरतूराम की पीठ थपथपाते हुए बोला ''दादा, आपका क्या नाम है ?''

फिरतूराम सोच में डूबा था। पिछली बार जो आऐ थे, हू–बहू ऐसे ही थे। ऐसे ही बोल रहे थे। गाँव की बपौती कित्ते बार बदलेगी ? आसपास बैठे लोगों ने बताया ''ये फिरतूराम है।''वह बोला ''हाँ तो, क्या नाम से फिरतूराम जी, आपका यह गाँव, क्या नाम है ..... जो भी हो,इसे हम गोद लेने की घोषणा करते हैं। ग्राम मोरडोंगरी को यह उद्योग गोद लेता है।''

अचानक फिरतूराम फट पड़ा। वह झटके से उठा, उसकी आख डबडबा रही थीं। रूंधे गले से वह बोला, ''गोदी ना लेई सरकार, गोदी न लेई।

Scanned by CamScanner

गोदी लेबै, ते डोंगरी, तोरा कपड़ा गीला कर देई।.....गोदी ना लेई। माफी दे देबै मांई-बाप।''

झूमता-झामता सा, सबको भौंचक छोड़कर, वह नदी की कगार के किनारे-किनारे, अंधेरे में गुम हो गया। दूर से उसके बेसुरे आलाप की आवाज आ रही थी -

'' हम बिक जईहें राजा,
तुम पे बुन्देले ॥''

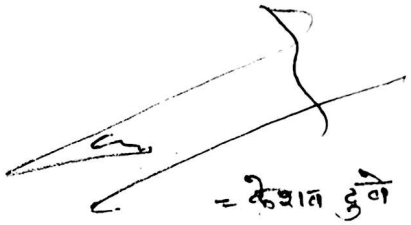

Scanned by CamScanner